Core

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा बारह
परीक्षार्थी प्रवेश–पत्र के अनुसार भरे

विषय Subject : Hindi Core

विषय कोड Subject Code : 302

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : Saturday, 22-04-2017

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : Hindi

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे कोड को दर्शाएं : Write code No. as written on the top of the question paper :	Code Number	Set Number
	2/1	● ② ③ ④

अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका (ओं) की संख्या
No. of supplementary answer-book(s) used: Nil

विकलांग व्यक्ति : Person with Disabilities : हाँ / नहीं **Yes / No**: No

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएं।
If physically challenged, tick the category

B	D	H	S	C	A

B = दृष्टिहीन, D = मूक व बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक
C = डिस्लेक्सिक, A = ऑटिस्टिक
B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged
S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic

क्या लेखन – लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं
Whether writer provided : Yes / No: No

यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये सोफ्टवेयर का नाम :
If Visually challenged, name of software used : None

*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।

Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

3403329
302/03378

खण्ड - ग

8) (क) 'तुम', 'तुम्हारा' सर्वनाम कवि की रहस्यमय प्रिय के लिए प्रयुक्त हुआ है जो उनकी माँ, बहन, प्रेमिका, पत्नी कोई भी हो सकती है। हमें ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि कवि पूरी तरह उसके प्रेम में मगन है और अपने अंदर-बाहर उसी को देखकर लोगों में प्रेम बाँट रहे हैं।

(ख) वह 'अनजान रिश्ते' कवि का उनके रहस्यमय प्रिय से है। यह रिश्ता उनके दिल, दिमाग में पूरी तरह समा गया है और उनको आनंदित करता है।

इसका उनपर यह प्रभाव पड़ा कि उनकी आत्मा कमज़ोर हो गई, वे भविष्य की आशंका से डरते हैं और हमेशा अपने प्रिय को चारों तरह महसूस करते हुए लोगों में प्रेम बाटते हैं।

(ग) इसका अर्थ है कि कवि हमेशा लोगों में प्रेम बाँटते रहते हैं और आत्मनिर्भर होने के लिए अपने प्रिय को भूलने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन जितना भी वह प्रेम बाँट रहे हैं उतना ही वह प्रेम बढ़ता जा रहा है। ऐसा लग रह है उनके मन में प्रेम रूपी मीठे पानी का झरना है जो निरंतर बह रहा है।

2017

(घ) कवि की मनःस्थिति असमंजस वाली है। वह अपने प्रिय को जितना भूलने की कोशिश कर रहे हैं उतना ही उनका प्रेम बढ़ रहा है। वे हृदय में प्रिय का प्यार, यादें लिए हैं और चंद्रमा में भी अपने प्रिय को ही देख रहे हैं। वे प्रिय के प्रेम और दूसरों में प्रेम बांटने में खो चुके हैं।

9) (क) काव्यांश में 'रुबाई छंद' का प्रयोग है। रुबाई' उर्दू का छंद है। इसमें पहले, दूसरे और चौथे पंक्ति में तुक मिलता है और तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है।

(6)

(ख) 'चाँद के टुकड़े' में रूपक अलंकार है। माँ अपनी ममता और वात्सल्य के कारण अपने बच्चे पर चाँद होने का आरोप कर रही है। यहाँ पर कवि ने बच्चे के चाँद के टुकड़े के समान कोमल, सुंदर होने का दृश्य सच किया है।

(ग) काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ निम्न हैं—
- सरल, सहज, प्रवाहपूर्ण, खड़ी बोली का प्रयोग है।
- कवि ने देशज शब्द अर्थात् क्षेत्रीय भाषा का अनूठा प्रयोग किया है। जैसे – लोका।

10) (क) पथिक → पथिक की गति में तीव्रता का कारण था कि उसका जीवन क्षणभंगुर है और इच्छाएँ अनंत हैं इसलिए जब वह अपनी मंज़िल के पास पहुँचने

(6)

लगता है तो जल्दी-जल्दी चलता है कि कहीं रास्ते में ही देर न हो जाए।

पक्षी → पक्षियों की तीव्रता का कारण उनके बच्चे होते हैं जो अपनी माँ का खाने के लिए इंतजार कर रहे होते हैं। इन्हीं के बारे में सोचकर पक्षी तेज उड़ने लगते हैं की कहीं रात न हो जाए।

कवि → कवि की गति में शिथिलता का कारण यह है कि उनका कोई अपना नहीं है। वह यह सोचकर धीरे हो जाते हैं कि वह किसके लिए तेज चले। हमसे उम्मीद करने वाले ही हममें तीव्रता लाते हैं। कवि से किसी की उम्मीद नहीं है क्योंकि उनका कोई नहीं है।

(ख) 'बात की चूड़ी मरने' का अर्थ है जटिल शब्दों के प्रयोग करने से बात का मूल भाव खत्म हो जाना। बात जिस अर्थ के लिए कही गई थी उसमे न रहना। भाषा में उलझने के कारण सरल बात भी कठिन हो जाती है और उसका भाव खत्म हो जाता है।

'बात को सहूलियत से बरतने' का अर्थ है बात को भाषा में न फँसाकर सरल तरह से कहना। हर शब्द का अपना अर्थ होता है और उनका प्रयोग स्थिति देखकर ही करना चाहिए। भाषा में ज्यादा नहीं उलझना चाहिए।

2017

11) (क) सद्भाव का ह्रास तब होता है जब हम बाज़ार की चीज़ें और उसके आकर्षण को देख उसपर मुग्ध हो जाते हैं और अनावश्यक चीज़ें खरीदना चाहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि हमारे अपने अपने नहीं रहते, हमारे बीच रिश्ता नहीं रहता और हम ग्राहक, बेचक की तरह एक दूसरे को ठगना चाहते हैं।

08

(ख) स्वभाव में ग्राहक-विक्रेता व्यवहार इसलिए आ जाता है क्योंकि हमारे मन में असंतोष है और हम कपट का सहारा लेकर सामने वाले को लूटने में लग जाते हैं। हममें स्वार्थ आ जाता है। इसके लक्षण यह है कि हम एक-दूसरे को ठगना चाहते हैं और एक की हानि में दूसरे को अपना स्वार्थ दिखता है।

(ग) 'ऐसे बाज़ार को' का अर्थ है वो बाज़ार जहाँ कपट हो, लोग रिश्ते भूल जाएँ और एक दूसरे को ठगने में लगे रहें। ये मानवता के लिए विडंबना इसलिए है क्योंकि ऐसे बाज़ार में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता, शोषण होता है, कपट सफल और निष्कपट शिकार होता है।

(घ) आज की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति की निम्न विशेषता है–

- छल-कपट से व्यपार होता है।
- लोग अपने स्वार्थ के सामने रिश्ते भूल जाते हैं।
- लोगों का शोषण होता है, आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं।

12) (क) भक्तिन लाट साहब तक लड़ने को इसलिए तत्पर है क्योंकि वह महादेवी वर्मा से
अत्यधिक प्यार करती है और उन्हें अकेले कारावास में नहीं जाने देना
चाहती। उसे लगता है कि नौकर को मालिक से दूर करना बहुत बड़ा
अन्याय इसलिए वह या तो उन्हें कारावास से छुड़ाना चाहती है या
खुद भी उनके साथ कारावास जाना चाहती। वह दूसरों की तरह यह
अन्याय सहकर चुप नहीं रह सकती।

इससे पता चलता है कि भक्तिन एक सच्ची भक्त या नौकर थी। वह
बिना स्वार्थ के महादेवी वर्मा की सेवा करती थी। पूर्ण रूप से समर्पित एवं
स्वाभिमानी थी। वह निडर थी और कोर्ट जाने से भी नहीं डरती, हिम्मती थी

(ख) चार्ली चैप्लिन के व्यक्तित्व में उसके जीवन संघर्षों का बड़ा हाथ है। संघर्ष
के कारण ही वह इतने बड़े बन पाए। उनकी माँ पति द्वारा छोड़ी हुई,
दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री थी। चार्ली का बचपन गरीबी में बीता। उनकी
माँ पागल हो गई थी, माँ-बाप दोनों खानाबदोश थे। चार्ली भी घुमंतू थे।
उन्होंने बचपन में बहुत संघर्ष किया और कई आक्षेपों को सहा। माँ
के द्वारा सुनाई दो कहानी ने बहुत असर डाला। बाइबल की कहानी सुनकर
उनमें स्नेह, करुणा, ममता जगी। इसे ही जीवन का सार बनाया। कसाई

17

के बार-बार गिरने और भेड़ को काटने की कहानी ने हास्य में करुणा उकेरने की भावना जगाई।

अत्यधिक संघर्ष और आक्षेपों के बाद वह प्रसिद्ध हुए।

(ग) 'नमक' कहानी का मूल संदेश यह है कि भले ही बंटवारा हो गया हो लेकिन आज भी लोगों में एक दूसरे के प्रति ममता, स्नेह की भावना है। सफ़िया, सिख बीबी, कस्टम अधिकारी सब अभी भी अपने वतन से प्यार करते हैं, अपनी मिट्टी का सम्मान करते हैं। मानचित्र पर लकीर खींच देने से लोग नहीं बटते। लोग हमेशा इस उम्मीद में रहते हैं कि कभी न कभी फिर से हम एक होंगे।

'नमक' कहानी में सिख बीबी का लाहौर के नमक के लिए प्यार, लाहौर के कस्टम अधिकारी का जामा मस्जिद के लिए सम्मान और सुनील दास गुप्त का ढाका की मिट्टी के लिए प्यार दिखाता है कि लोगों के दिल अब भी अपने वतन के लिए धड़कते।

वापस एकता लाने के लिए हमें उन चंद लोगों को रोकना होगा जो कटुता बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं मैत्री का नहीं। लोगों की एकता की उम्मीद को सच करना होगा।

9

(ङ) जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का एक रूप न मानने के पीछे यह तर्क है कि जाति-प्रथा से श्रम-विभाजन नहीं श्रमिक विभाजन होता है। व्यक्ति को उसकी प्रतिभा के अनुसार नहीं जाति के अनुसार कार्य करना पड़ता है। गर्भधारण के समय से ही उसका कार्य निश्चित रहता है। उस निर्धारित क्षेत्र में रुचि न होने के कारण इंसान टालू कार्य करता है। इससे देश-निर्माण में हानि होती है। इस परिवर्तनशील जगत में अगर किसी का कार्य बंद हो गया तो उसे दूसरा कार्य करने की इजाज़त नहीं होती। जाति-प्रथा इसलिए भुखमरी और बेरोजगारी का भी प्रमुख कारण है। जाति निर्धारित करना मनुष्य के खुद के वश में नहीं है इसलिए इसके आधार पर भेद-भाव नहीं होना चाहिए।

मनुष्य को उसकी प्रतिभा और कार्यकुशलता (जो उसके वश में है) के आधार पर कार्य चुनने का हक होना चाहिए।

13) यशोधर पंत के जीवन में पुराने होते जा रहे जीवन-मूल्यों और नए प्रचलनों के बीच द्वंद था। एक तरफ आधुनिकता थी तो दूसरी तरफ किशनदा की सीख। वे इन दोनों में समांजस्य नहीं बना पा रहे थे।

- एक ओर बेटे की तरक्की से खुश थे तो दूसरी ओर उसका इतना पैसा कमाना उन्हें समहाउ इम्प्रापर लग रहा था।
- उन्हें बेटी का जीन्स-टॉप और पत्नी का बिना बाँह वाला ब्लाउज पहनना

नही पसंद था।

- दफ्तर और घर के लोग पाश्चात संस्कृति को अपना चुके थे लेकिन यशोधर बाबू को यह सब अंग्रेजों के चोंचले लगते।
- वह स्कूटर की बजाय पैदल दफ्तर जाना पसंद करते।
- पार्टी के समय पूजा करने बैठ गए।
- केक नही खाए।
- वे रिश्तेदारी निभाना चाहते थे लेकिन उनके बच्चे ऐसा नहीं चाहते थे।
- नई तकनीकों को अपनाना गर्व महसूस कराता था लेकिन समहाउ इम्प्रापर भी लगता।

इन सबके कारण उन्हें अत्यधिक संघर्ष करना पड़ा। उनकी अपने बच्चों और बीवी से नहीं बनती थी। उन्हें सबके साथ होते हुए भी अकेले जीवन जीना पड़ा था।

14) (क) सिंधु घाटी की सभ्यता की निम्न विशेषताएँ थी –

- सत्ता पोषित न होकर समाज पोषित था। हथियार सत्ता का प्रतीक है और खुदाई में कोई भी हथियार नही मिले।
- नगर-नियोजन सुव्यवस्थित था। कुंड में पानी आगमन और निकासी का प्रबंध था। नालियाँ ढकी हुई थी।
- जल संस्कृत कहा जा सकता है क्योंकि पानी की प्रबंध अच्छा था। 700

से भी ज्यादा कुएँ थे।

- मकान पक्की ईंटों से बने थे। किसी भी घर का दरवाजा मुख्य सड़क पर न खुलकर संबंध गलियों में खुलता था।
- बड़े घरों में छोटे कमरे आबादी का सूचक था।
- महाकुंड था और उसके पास दो पांत में आठ स्नानाघर थे।
- बौद्ध स्तूप 25 फुट ऊँचे टीले पे था। यहाँ भिक्षु रहा करते थे। इस इलाके को 'गढ़' कहते हैं और यह भारत का सबसे पुराना 'लैंडस्केप' था।
- लोगों को कला से प्यार था - मिट्टी के बर्तन, उत्कीर्ण आकृतियाँ किए हुए, आदि मिले।
- लघुता में महत्ता थी - नरेश का मुकुट अत्यधिक छोटा मिला।
- लोगों में स्वयं का अनुशासन था।
- सिंधु घाटी आज की सुनियोजित सभ्यता पर पूरे तरह खड़ी उतरती है।

(ख) सौंदलगेकर मास्टर लेखक के मराठी टीचर थे। यही वे व्यक्ति थे जिनके कारण लेखक कविता लिखना शुरू किए। वे लेखक को बहुत मानते और हमेशा उनका प्रोत्साहन, हौसला बढ़ाते थे।

017

सौंदलगेकर के चरित्र की निम्न विशेषताएँ हैं —

- वे कविता सुरीली तरह से बच्चों को गाकर सुनाते थे।
- कविता गाते हुए अभिनय भी करते थे।
- उस भाव के दूसरे कवियों की भी कविता सुनाते।
- खुद भी कविता लिखते थे तो कभी-कभी अपनी भी कविताएँ सुनाते थे।
- लेखक को कविता लिखने पर शाबाशी देते और दूसरे कक्षा के सामने गवाते।
- वे कविता गाते समय मग्न हो जाते।
- लेखक कविता की भाषा, छंद, अलंकार, आदि के बारे में बताते।

वास्तव में सौंदलगेकर एक आदर्श शिक्षक हैं जो समाज को सही दिशा पर ले जाते हैं। वे विद्यार्थी को हमेशा आगे बढ़ने की सीख देते और उनका साथ देते।

खण्ड – क

1) (क) दबाव में कार्य करने के नकारात्मक प्रभाव यह है कि व्यक्ति टालू कार्य करता है। कार्य में असफलता मिलती है। वह अपना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी खो देता है।

(ख) अगर हम दबाव को अपनी कमजोरी नहीं, ताकत बना ले तो वह हमारी सफलता का कारण बन सकता है क्योंकि सफलता - असफलता, सुख - दुख, आदि केवल हमारे दृष्टिकोण पर ही निर्भर करता है। हमें सकारात्मक सोचना चाहिए।

(ग) दबाव में सकारात्मक सोच यह होता है कि हम उसे अपनी ताकत बना ले। मौजूद समस्या और बोझ को भूलकर यह सोचे की हम अत्यंत सौभाग्यशाली है जो यह कठिन कार्य हमें मिला तो हमारी बेहतरीन क्षमताएँ जागृत होती है।

(घ) कार्य करते समय हमारा मन मस्तिष्क को चलाता है और हमारा मस्तिष्क शरीर को। इसलिए हमें मन में सकारात्मक सोच रखनी चाहिए क्योंकि मन ही हमारे शरीर को चलाता है।

(ङ) इसका अर्थ है कि कुछ लोग दबाव को हमेशा ताकत बना लेते है और हमेशा जीतते है। उन्हें जीतने की आदत हो जाती है लेकिन ऐसे लोग भी हो जो दबाव को कमज़ोरी बनाकर हमेशा हार प्राप्त करते है।

(च) हमें अपने ऊपर के दबाव को अपनी ताकत बनाकर हमेशा सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। इससे हमें ज़रूर सफलता प्राप्त होगी।

(छ) हम वही महसूस करते हैं जो हम सोचते हैं। हमारा दिमाग जिस बारे में सोचेगा वह बढ़ती जाएगी। अगर हम अपनी शक्तियों के बारे में सोचेंगे तो अपने-आप को शक्तिशाली महसूस करेंगे।

(ज) शीर्षक → ~~दबाव : हमारी शक्ति~~ 'सकारात्मकता : दबाव में भी शक्ति'।
क्योंकि पूरे गद्यांश में यही भाव निकला है।

2) (क) कविता मनुष्य के दीप रूपी मन को संबोधित है। कविता मनुष्य के मन को कह रही है कि तुम हमेशा जले रहो अर्थात् हमेशा उत्साहित रहो, निराश न हो।

(ख) कालजयी बनकर रास्ते में आने वाली हर जटिल बाधाओं जैसे सागर की तरंगे, भूमंडल, ज्वाला, ज़हरीले फन, आदि का दलन करने को कह रही है।

(ग) पत्थर, काँटे रास्ते में आने वाली बाधाओं के प्रतीक हैं। वे पैरों को छलनी कर देते हैं अर्थात् हमें तोड़कर रोकने और निराश करने की कोशिश करते हैं।

(घ) धरती का अंतर सागर की तरंगों, डोलते भूमंडल, बिजली की द्युति, ज्वाला, आदि समस्या या बाधाओं से हिल जाता है। यह भी मनुष्य को उसकी मंजिल तक जाने से रोकता है।

(ङ) इसका अर्थ है जिस प्रकार दीप बिना काँपे हमेशा प्रकाश फैलाता है वैसे ही मानव के मन को बिना डरे हमेशा उत्साहित रहना चाहिए। समस्याओं को देखकर निराश नहीं होना चाहिए।

खण्ड - ख

(क) संचार का महत्व —

- लोगों को देश - विदेश में घटने वाली ~~घट~~ घटनाओं के बारे में बताना।
- लोगों को शिक्षित और मनोरंजित करना

(ख) समाचार किसी आधुनिक घटना, समस्या या भावना की रिपोर्ट है जिसमें अधिक से अधिक लोगों की रुचि और जिससे अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़े।

(ग) इंटरनेट पत्रकारिता के लाभ —

- श्रव्य, दृश्य, शब्द तीनों माध्यम में सूचना मिलती है।
- हर थोड़ी देर में अपडेट होती रहती है।

(घ) जब रिपोर्टर घटनास्थल से फोन करके किसी घटना की सूचना देता है तो इसे 'फ़ोन-इन' कहते है।

(ङ) समाचार-लेखन के छह ककार है- क्या, कब, क्यों, कहाँ, कैसे, कौन। समाचार में इन सब की जानकारी होनी चाहिए।

4) ~~निबंध~~ <u>पत्र लेखन</u>

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।
22 अप्रैल 2017

सेवा में,
मुख्य अभियंता,
लोक निर्माण विभाग,
भारत सरकार,
नई दिल्ली।

<u>विषय</u> :- सड़क के सही रख-रखाव हेतु आवेदन पत्र।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि हाल ही में नोएडा से दिल्ली तक आने वाली

सड़क का निर्माण हुआ था। अभी यह कार्य हुए एक महीना भी नहीं हुआ और सड़क फिर से टूटने लगी, उसमें कई जगह गड्ढे हो गए हैं। इसके कारण हमें जैसे लोग जो काम से रोज़ दिल्ली के गाँव से नोएडा जाते हैं उन्हें परेशानी उठानी पड़ती है। इसके कारण कई दुर्घटनाएँ भी हो रही हैं। इन सबसे पता चलता है कि सड़क का रख-रखाव असंतोषजनक है। इस सड़क का ठीक होना आवश्यक है। सड़क का पुनः निर्माण अच्छी क्वालिटी की सामग्री से होना चाहिए और इसपर बड़े वाहन न चलने दें। इन सड़कों के रख-रखाव की जिम्मेदारी को भी सही से निभाना चाहिए ताकि आम लोगों को तकलीफ न हो।

अतः आपसे निवेदन है कि आप शीघ्र ही इधर ध्यान दें।

सधन्यवाद !

आपकी प्रार्थी,
अ ब स।

6 फ़ीचर लेखन

स्वच्छ भारत : स्वस्थ भारत

सुबह का अखबार, खोलते ही मोदी जी की तस्वीर, उनकी स्वच्छ भारत का निर्माण करने की चाह। प्रसिद्ध लोगों द्वारा स्वच्छ भारत बनाने का आग्रह। सबके मन में स्वच्छता का सपना और एक स्वस्थ समाज जो तरक्की के पथ पर बढ़े।

स्वच्छता हमारे मूलभूत कर्तव्यों में से एक है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने 2 अक्तूबर, 2014 को स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए स्वच्छता अभियान शुरू किया था। आज हर व्यक्ति को इसकी खबर है। स्वच्छ भारत के निर्माण से केवल भारत का विकास होगा, यह सत्य नहीं है। हाँ, इससे भारत का विकास तो ज़रूर होगा लेकिन उससे पहले नीचे स्तर पर हमारा विकास होगा। आज अस्वच्छता के कारण न जाने कितनी बिमारी भारत में फैल रही है जैसे टाइफाइड, मलेरिया, आदि। इन सब का मूल कारण हम इंसान हैं। कहने को तो हम 'स्वच्छ भारत : स्वस्थ भारत' के नारे बहुत तेज लगाते हैं लेकिन क्या हम कभी इसमें योगदान देते हैं? हर व्यक्ति अपना घर तो साफ करता है लेकिन वह कूड़ा वह बाहर सड़क पर फेक देता है। इसके बाद सोचता है कि सफाई हो गई। लेकिन वास्तव में यह स्वच्छता नहीं है, यह केवल स्वयं को साफ रखना। स्वच्छ भारत के लिए हमें अपने घर, गली, शहर, आदि सबको साफ रखना

होगा।

स्वच्छ भारत : स्वस्थ भारत देखने का सपना एक बड़ा सपना ज़रूर है लेकिन नामुमकिन नहीं। अगर हमारा वातावरण, हमारा भारत स्वच्छ रहेगा तो हम बिमारियों से बचेंगें। मृत्युदर कम होगा, और हम भारत के निर्माण में अपना योगदान दे पायेंगे। इसलिए एक विकसित और स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए पहले हमें बीमारी फैलाने वाले किटाणु के घर को नष्ट करना होगा, स्वच्छ भारत बनाना होगा। यही हमारे देश की प्रगति का कारण होगा।

7) आलेख

(9½)

भ्रूण-हत्या की समस्या

— अ ब स

भारत उन शहरो में से एक है जहाँ नारी को देवी माना जाता है, उनकी पूजा की जाती है। साथ ही भारत ही वह देश है जहाँ भ्रूण-हत्या सबसे ज्यादा है। भ्रूण हत्या का अर्थ है कन्याओं को जन्म से पहले ही मार देना। उनके जीवन को खत्म कर देना, उनका जीने का अधिकार छीन लेना।

जहाँ नई टेक्नोलॉजी का विकास करना समाज के लिए लाभकारी माना

गया है, वहीं इसके कुछ नुकसान भी हैं। आज मनुष्य के पास वह तरीका है जिससे वह गर्भधारण के समय ही जान सकता है कि गर्भ में लड़का है या लड़की। अगर वह लड़का होता है तो लोग खुश होते हैं और लड़की होती है तो उसे मार दिया जाता। लोग पुरानी सोच के कारण सोचते हैं कि लड़की माँ-बाप पर बोझ होती है। उसको पढ़ाया-लिखाया जाता है, पैसे खर्च होते हैं और फिर वह दूसरे के घर चली जाती है। इसी सोच के कारण आज समाज में इतनी भ्रूण हत्या हो रही है। लड़कियों की जनसंख्या प्रतिवर्ष कम होती चली जा रही है।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश माना गया है जहाँ लोगों को उनके सभी अधिकार मिलते हैं। ऐसे देश में नारी को जीने का ही अधिकार नहीं है। यह हमारे लोकतांत्रिकता पर उठा सबसे बड़ा प्रसन्न है। प्रश्न है।

आज के विकासशील युग में हर व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि कोई भी हो लड़का या लड़की उसे इस समाज में जीने का हक है और अपना कोई अधिकार नहीं है कि हम किसी को मारे। कहा जाता है—

"नर और नारी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।"

जहाँ यह मान्यता हो वहा भ्रूण हत्या नहीं होनी चाहिए। अगर नारी को मौका मिले तो वह लक्ष्मीबाई, मदर टेरेसा, इंदिरा गांधी, आदि बनकर उभर सकती है और देश के निर्माण में बहुत बड़ा योगदान दे सकती है।

भारत को विकासशील देश से विकसित देश बनाने के लिए हमें सबसे पहले समाज में व्याप्त 'भ्रूण हत्या' जैसी समस्या को खत्म करना होगा।

"बेटी बचाओ, देश विकसित कराओ।"

3) निबंध लेखन

विकास के पथ पर भारत

प्रस्तावना – भारत, दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जहाँ के लोग अपनी कार्यनिष्ठा और लगन, मेहनत के लिए जाने जाते हैं। आज से एक दशक पहले भारत में कुछ नहीं था। हो सकता है भारत को कई देश जानते भी न हो। लेकिन पिछले एक दशक में भारत ने जो अंजान भारत से विकासशील भारत तक का सफ़र तय किया है यह सराहनीय है। आज हर क्षेत्र में भारत विकास के पथ पर चल रहा है चाहे वो टेक्नोलॉजी हो या नारी शक्ति। आज हर जगह भारत का बोल बाला है।

टेक्नोलॉजी में भारत → पिछले कुछ सालों में भारत ने 'साइंस एंड डेवलपमेंट' के क्षेत्र में अधिक पाँव पसारा है। जहाँ हमें हर चीज़ दूसरे देश से लेनी पड़ती थी वही आज हम दूसरे देशों को चीज़े

भेज रहे हैं जैसे युद्ध के समान, आदि। आज भारत से भी कई मिसाइल लांच हो रही हैं। नए-नए साइंटिस्ट उभकर आ रहे हैं। आज भारत इस क्षेत्र में अमेरिका, जापान, जैसे विकसित देश से भी सामना कर सकता है।

नारी सशक्तिकरण → आज के भारत में नारियो को बराबर का सम्मान मिलता है। वह हर क्षेत्र में पुरुष से कदम से कदम मिलकर चल रही है। घर से लेकर सांसद तक नारी शक्ति दिखाई पड़ती। यह भी भारत के विकास का एक कारण है।

मेक इन इंडिया → इस अभियान के शुरु होने के कारण आज भारत बाहर से आयात न करके सब चीज खुद ही बना रहा है। इसके कारण भारत के लोग आत्मनिर्भर होना सीख गए है और अब हम चाहे तो चीन, जापान जैसे देशो से पुरी तरह कुछ भी लेने से मना कर सकते हैं क्योंकि अब हम अपने आप मे पुरे है।

उपसंहार — आज विकास के पथ पर चल रहे भारत मे सबसे जरुरी है कि हम अपनी इस प्रगति को बनाए रखे और समाज में अशांति फैलाने वाले तत्वो को खत्म करे।

अब वह दिन दूर नही जब हमारा विकासशील भारत, एक विकसित भारत बन जाएगा और महाशक्ति बनेगा।

30200८9

50411